लिबटेक इंडिया

झारखण्ड में मनरेगा : **2024-25** के लिए आंकड़े आधारित विश्लेषण

Email: vivek.gupta@libtech.in | 8873341415

http://libtech.in/

@LibtechIndia

@libtechindia

लिबटेक के बारे में

लिबटेक इंडिया, मुख्य संस्था Collaborative Research and Dissemination (CORD) के अंतर्गत एक केंद्र (centre) के रूप में कार्य करता है। हम इंजीनियरों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और सामाजिक वैज्ञानिकों की एक टीम हैं, जो भारत में सार्वजनिक सेवा वितरण को बेहतर बनाने में रुचि रखते हैं। हम पिछले 10 वर्षों से देश के विभिन्न राज्यों, विशेष रूप से झारखंड में, एक टीम के रूप में काम कर रहे हैं। हालांकि, व्यक्तिगत रूप से हममें से कुछ लोग इससे भी पहले से इस क्षेत्र में सक्रिय रहे हैं।

इन वर्षों में, हमने राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर मनरेगा (MGNREGA) के कार्यान्वयन पर लगातार रिपोर्ट प्रकाशित की हैं। यह झारखंड मनरेगा ट्रैकर हमारी दूसरी रिपोर्ट होगी, इससे पहले हमने वितीय 2020-21 के लिए यह रिपोर्ट जारी की थी। हमारी रिपोर्टों के आधार पर नीतिगत सिफारिशों की गयी हैं, जो राज्य सरकारों और ग्रामीण विकास मंत्रालय (MoRD) द्वारा कुछ मामलों में विचार और कुछ मामलों में क्रियान्वित भी किया गया है।

इस रिपोर्ट के बारे में

यह रिपोर्ट वित्तीय वर्ष 2024-25 के दौरान झारखंड में मनरेगा (MGNREGA) के कार्यान्वयन का विश्लेषण करती है, जिसमें पिछले वर्ष 2023-24 के आंकड़ों को संदर्भ के रूप में लिया गया है। यह डेटा https://nrega.nic.in से 8 मई 2025 की स्थिति तक प्राप्त किया गया है, जो राज्य में इस योजना की वर्तमान स्थिति पर महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है। हमने झारखंड के प्रदर्शन को समझने के लिए राष्ट्रीय प्रवृत्तियों का भी विश्लेषण किया है। इस रिपोर्ट का उद्देश्य नागरिकों और संबंधित पक्षों को मनरेगा के क्रियान्वयन में प्रमुख प्रवृत्तियों और कार्यक्रम की स्थिति के बारे में जानकारी देना है।

मुख्य खोज:

- ❖ जहाँ एक ओर वितीय वर्ष 2024-25 में परिवारों के पंजीकरण में **5.2%** की वृद्धि हुई, वहीं कार्य करने वाले पंजीकृत परिवारों और मजदूरों की भागीदारी में क्रमशः **7.4%** और **9.7%** की गिरावट देखी गई। यह संकेत देता है कि अधिक परिवार योजना से जुड़ना चाहते हैं, लेकिन काम की मांग रोजगार में परिवर्तित नहीं पा रहा। भाग 2.1
- ❖ राज्य में कुल रोजगार में गिरावट आई है। कार्य करने वाले परिवारों और सृजित हुए मानव-दिवसों (persondays) में क्रमशः **7.4%** और **8.0%** की गिरावट आई है। 100 दिनों का रोजगार पूरा करने वाले परिवारों की संख्या में **18%** की बड़ी गिरावट देखी गई। भाग 2.2
- ❖ वितीय वर्ष **2024-25** में **20** जिलों के मानव-दिवस सृजन में गिरावट देखी गई, जबकि केवल 4 जिलों में वृद्धि हुई। साहेबगंज में सबसे अधिक **27%** की गिरावट हुई, जबकि गढ़वा जिले में 2.7% की वृद्धि देखी गई। जनसंख्या के हिसाब से 4 सबसे बड़े जनजातीय जिलों में मानव-दिवसों के सृजन में नकारात्मक स्थिति पाई गयी। भाग 2.3
- ❖ **2024-25** के जुलाई और अगस्त माह में मानव-दिवस संख्या में तेजी से गिरावट हुई, इसका मुख्य कारण मानसून में अधिक और समय से बारिश होना हो सकता है. लेकिन अक्टूबर से जनवरी के बिच वापस मानव-दिवस में बढ़ोतरी हुई है । भाग 2.4
- ❖ झारखण्ड में अनुसूचित जनजाति (ST) और अनुसूचित जाति (SC) दोनों की नरेगा में भागीदारी, उनकी जनसंख्या हिस्सेदारी की तुलना में कम है, व 2024-25 में इसमें थोड़ी और गिरावट दर्ज की गई है। यह स्थिति राष्ट्रीय स्तर की भागीदारी के विपरीत है, जहाँ अनुसूचित जनजातियाँ (STs) की अधिक भागीदारी दर्ज की गई है।भाग 2.5
- ❖ वितीय वर्ष 2024-25 में जॉबकार्ड और श्रमिकों के विलोपन **(Deletion)** संख्या में गिरावट आई है, जबकि दोनों वित्तीय वर्षों में जॉबकार्ड और श्रमिकों जो जोड़ने की संख्या में वृद्धि दर्ज हुई है। भाग 3
- ❖ मनरेगा के तहत वितीय वर्ष 2024-25 में घोषित मजदूरी दर बढ़ने के बावजूद श्रमिकों को अभी भी औसतन **10%** कम भुगतान मिला, जिससे उनकी वास्तविक आय कम रही। भाग 4.1
- ❖ वितीय वर्ष **2024-25** में अकुशल मजदूरी पर खर्च में **₹95.2** करोड़ की गिरावट हुई । भाग 4.2

2. राज्य स्तर पर रोजगार

मनरेगा एक मांग आधारित रोजगार योजना है, जिसका उद्देश्य मजदूरी करने की इच्छा रखने वाले श्रमिकों की आवश्यकताओं को पूरा करना है। हालांकि, हाल के वर्षों में केंद्र सरकार द्वारा बजटीय आवंटन पर कड़ी निगरानी, राज्यों के बीच राजनीतिक इच्छाशक्ति और प्रशासनिक क्षमता में असमानता के कारण इस योजना के क्रियान्वयन पर गंभीर प्रभाव पड़ा है। ये सीमाएं सीधे तौर पर यह निर्धारित करती हैं कि ज़मीनी स्तर पर मनरेगा कितनी प्रभावी रूप से काम करता है।

इस पृष्ठभूमि को देखते हुए, झारखंड में इस कार्यक्रम के कामकाज को समझने के लिए रोजगार संबंधित आँकड़ों का विश्लेषण आवश्यक हो जाता है। निम्न भाग में हम वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिए प्रमुख रोजगार संकेतकों का 2023-24 के आँकड़ों से तुलना करते हुए अध्ययन करते हैं। इसमें रोजगार सृजन, कमजोर वर्गों की भागीदारी और बजट उपयोगिता से जुड़े आँकड़े इस योजना के मूल्यांकन के लिए प्रमुख संकेतक माने गए हैं।

2.1 मनरेगा के अंतर्गत परिवार और श्रमिकों की भागीदारी

-वित्तीय वर्ष *2024-25* में कार्य करने वाले परिवारों और श्रमिकों की संख्या में क्रमशः *7.4%* और *9.7%* की गिरावट देखी गई।

वित्तीय वर्ष 2024-25 में झारखंड में मनरेगा के तहत पंजीकृत परिवारों की संख्या में वृद्धि देखी गई। इस वर्ष पंजीकरण में 5.2% की वृद्धि यह दर्शाती है कि अधिक परिवार इस योजना का लाभ लेना चाहते हैं। हालाँकि, पंजीकरण बढ़ने के बावजूद, वास्तव में कार्य करने वाले परिवारों और श्रमिकों की संख्या में क्रमशः 7.4% और 9.7% की गिरावट आई है। यह संकेत करता है कि पंजीकरण की वृद्धि वास्तविक रोजगार में परिवर्तित नहीं हो सकी।

	वित्तीय वर्ष **2023-24** **(1)**	वित्तीय वर्ष **2024-25** **(2)**	राज्य में गिरावट का प्रतिशत **(%)** **[(1-2)/1*100]**[1]
पंजीकृत परिवार की संख्या (लाख में)	69.6	73.2	-5.2
नरेगा में काम किये परिवारों की संख्या (लाख में)	21.8	20.2	7.4
नरेगा में काम किये श्रमिकों की संख्या (लाख में)	25.6	23.1	9.7

तालिका *1:* वित्तीय वर्ष *2023-24* और *2024-25* में झारखण्ड में परिवारों और श्रमिकों की भागीदारी

2.2 मानव-दिवसों का सृजन

-वित्तीय वर्ष *2024-25* में, राज्य में कुल मिलाकर रोजगार में गिरावट देखी गई, और *100* दिनों का रोजगार पूरा करने वाले परिवारों की संख्या में कमी आई है।

तुलनात्मक आंकड़ों से स्पष्ट है कि रोजगार में भागीदारी और उसकी मांग दोनों में गिरावट आई है। कार्य करने वाले परिवारों की संख्या में 7.4% की कमी आई है। इससे भी अधिक गंभीर बात यह है कि 100 दिनों का रोजगार पूरा करने वाले परिवारों की संख्या में 18% की गिरावट देखी गई है।

[1] नकारात्मक मान (Value) बेहतर प्रवृति को दर्शाता है, जबकि सकारात्मक मान प्रदर्शन में गिरावट को दर्शाता है.

यह न केवल कम भागीदारी को दर्शाता है, बल्कि यह भी इंगित करता है कि जिन परिवारों को रोजगार मिला, उन्हें भी कम अवधि के लिए कार्य मिला।

राज्य का प्रदर्शन राष्ट्रीय औसत की तुलना में कमजोर रहा है, सिवाय औसत मानव-दिवस के जो केवल 0.6% घटा, जबकि राष्ट्रीय स्तर पर यह गिरावट 3.5% रही। ये आंकड़े यह दर्शाते हैं कि या तो कार्य की उपलब्धता सीमित रही, या कार्य की मांग में स्वयं कमी आई है।

	वितीय वर्ष **2023-24**	वितीय वर्ष **2024-25**	राज्य में गिरावट का प्रतिशत **(%)**	देश में गिरावट का प्रतिशत **(%)**
नरेगा में काम किये परिवारों की संख्या[2] **(लाख में)**	21.8	20.2	7.4	3.5
सृजित मानव-दिवस **(लाख में)**[3]	1097.1	1009.5	8.0	6.9
औसतन मानव-दिवस[4]	50.2	49.9	0.6	3.5
100 दिन काम पूरा करने वाले परिवारों की संख्या **(लाख में)**[5]	1	0.82	18	9.3

तालिका *2:* वितीय वर्ष *2023-24* और *2024-25* में झारखण्ड में रोजगार की प्रवृति

2.3 जिला स्तर पर रोजगार

-वितीय वर्ष 2024-25 में झारखंड के 24 में से 20 जिलों में मानव-दिवस सृजन में गिरावट देखी गई, जबकि केवल 4 जिलों में इसमें वृद्धि दर्ज की गई। जनसंख्या के हिसाब से शीर्ष 4 आदिवासी बहुल जिलों में मानव-दिवस सृजन में नकारात्मक रुझान देखा गया।

चित्र 1 यह संकेत करता है कि वितीय वर्ष 2024-25 में झारखंड के 24 जिलों में से 20 जिलों में मनरेगा के अंतर्गत उत्पन्न मानव-दिवसों में गिरावट आई है। विशेष रूप से साहेबगंज (27%), जामताड़ा (22.9%), रामगढ़ (18.6%) और लोहरदगा (18.5%) में बड़ी गिरावट दर्ज की गई।

हालाँकि, इस समग्र नकारात्मक प्रवृत्ति के बीच, केवल गढ़वा जिले में 2.7% की वृद्धि दर्ज की गई। इसके अतिरिक्त तीन जिलों- राँची, धनबाद और पूर्वी सिंहभूम में क्रमशः 1.3%, 0.7% और 0.3% की मामूली वृद्धि दर्ज की गई।

आदिवासी बहुल आबादी वाले चार प्रमुख जिले- खूंटी, सिमडेगा, गुमला और पश्चिमी सिंहभूम में मानव-दिवस में गिरावट देखी गई। इन जिलों में कुल गिरावट क्रमशः 8.8%, 11.6%, 10.7% और 5.6% रही।

---

[2] इस रिपोर्ट में जॉबकार्ड और परिवार शब्दों का उपयोग समानार्थक रूप में किया गया है।

[3] श्रमिकों (जॉबकार्ड धारक) द्वारा नरेगा में काम किये गये कुल दिनों की संख्या

[4] औसतन मानव-दिवस= (सृजित मानव-दिवस/नरेगा में कार्य किये कुल परिवार की संख्या)

[5] गिरावट प्रतिशत= (100 दिनों का कार्य करने पूरा करने वाले कुल परिवार की संख्या /नरेगा में कार्य किये कुल परिवार की संख्या)*100

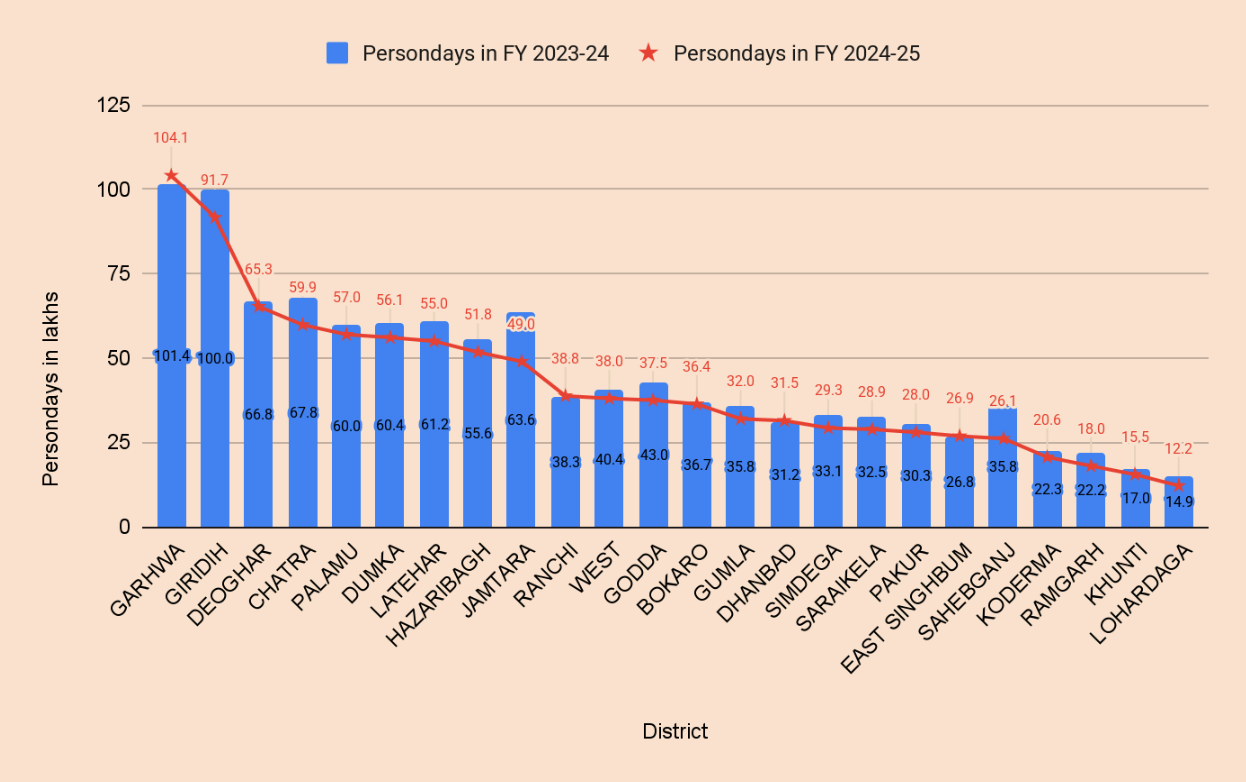

चित्र *1:* वितीय वर्ष *2023-24* और *2024-25* के बिच जिला स्तर पर मानव-दिवस सृजन की तुलना

2.4 झारखंड में मासिक मानव-दिवसों का सृजन

-मई माह के बाद मासिक मानव दिवस में तेजी से गिरावट हुई, हालाँकि अक्टूबर से जनवरी के बीच मानव-दिवसों के सृजन में वृद्धि दर्ज की गई।

चित्र 2 वितीय वर्ष 2024-25 और पिछले वर्ष के बीच मासिक मानव-दिवस निर्माण की प्रवृत्तियों को दर्शाता है। जहाँ 2024-25 की शुरुआत अप्रैल में 132.9 लाख मानव-दिवस के साथ ऊँचे स्तर से हुई, वहीं मानसून के महीनों में इसमें तेज़ गिरावट आई और अगस्त 2024 में यह न्यूनतम 11.9 लाख मानव-दिवस पर पहुँच गया। दोनों वर्षों में वर्षा के पैटर्न में अंतर होने की वजह से, मासिक मानव-दिवसों की प्रवृत्तियों में अंतर का एक संभावित कारण हो सकता है। 2024-25 वर्ष में मानसून का समय पर और अधिक तीव्रता से आना, मानव-दिवस में गिरावट का प्रमुख कारण हो सकता है।

हालाँकि, अक्टूबर 2024-25 से सुधार देखने को मिला, और अंतिम तिमाही में यह लगातार पिछले वर्ष के आँकड़ों से बेहतर प्रदर्शन करता रहा। जनवरी 2024-25 में मानव-दिवसों की संख्या 110.1 लाख तक पहुँच गई, जो 2023-24 के जनवरी के 67.8 लाख से कहीं अधिक थी, यहाँ तक की कोविड काल 2020-21 के 97.9 लाख मानव-दिवस के रिकॉर्ड को भी पार कर गई।

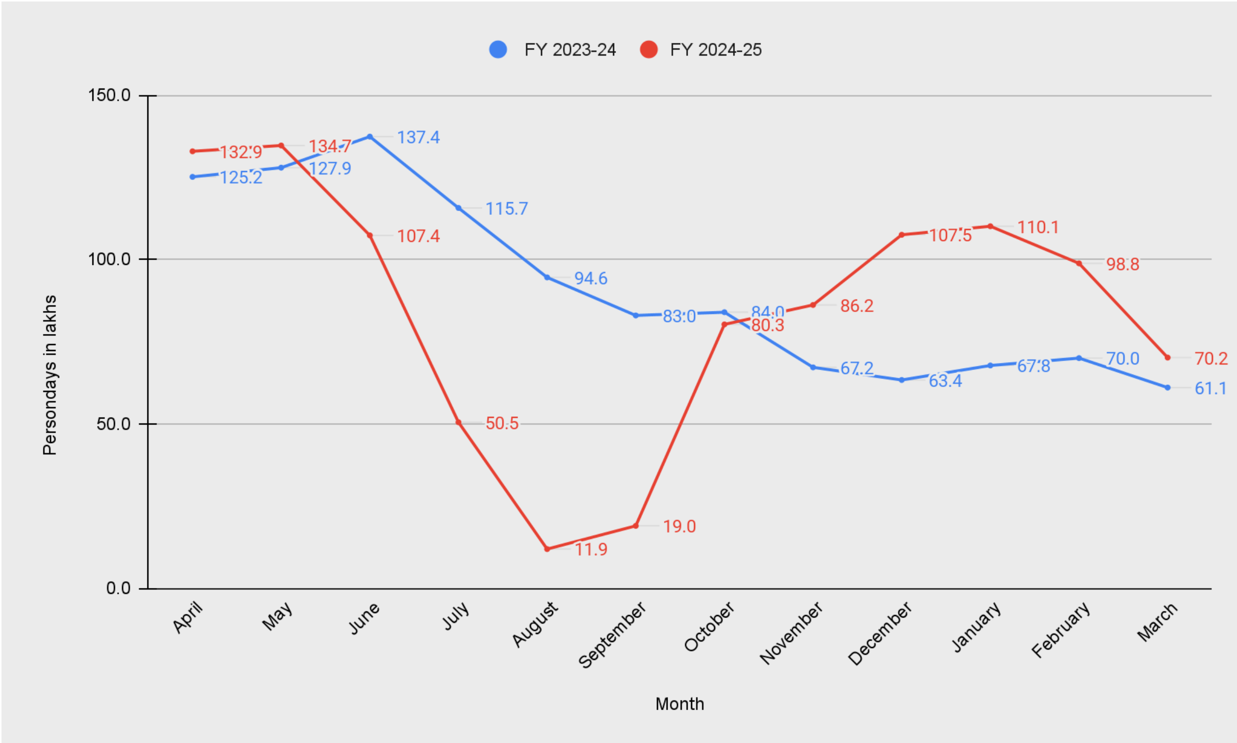

चित्र *2:* वितीय वर्ष *2023-24* और *2024-25* में मासिक स्तर पर मानव दिवस के सृजन की तुलना

मानव-दिवस में तेज बढ़ोतरी आश्चर्यजनक है क्योंकि अक्टूबर से दिसंबर के बीच विधानसभा चुनावों के कारण आदर्श आचार संहिता लागू थी। इसी अवधि के दौरान, 32 प्रखंडों में गैर सरकारी संगठनों द्वारा चलाए गए 'काम माँगो अभियान' से प्राप्त फील्ड अवलोकनों में यह सामने आया कि अधिकारी आचार संहिता का हवाला देकर काम की माँग से जुड़े आवेदन स्वीकार नहीं कर रहे थे।

इस आधार पर, ठीक उसी समय कार्य-दिवसों (workdays) में आई तेज़ बढ़त संदेह पैदा करती है और इस पर गहराई से जांच की आवश्यकता है। इन प्रवृत्तियों को समझने के लिए स्थल स्तर पर और गहन पड़ताल ज़रूरी है।

2.5 वंचित वर्गों की भागीदारी में उतार-चढ़ाव

-अनुसूचित जनजाति *(ST)* और अनुसूचित जाति *(SC)* की मनरेगा में भागीदारी में मामूली गिरावट दर्ज की गई है।

मनरेगा अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति समुदायों को आजीविका सुरक्षा प्रदान करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हालाँकि, झारखंड में इन दोनों समूहों की भागीदारी मानव-दिवसों के सृजन के लिहाज़ से अब भी कम है।

जनगणना 2011 के अनुसार, झारखंड की कुल जनसंख्या में अनुसूचित जातियाँ 12% हैं, लेकिन 2024–25 में उन्होंने कुल मानव-दिवसों में 9% का योगदान दिया। इसी तरह, अनुसूचित जनजातियाँ, जो राज्य की कुल जनसंख्या का 26% हिस्सा हैं, उन्होंने कुल मानव-दिवसों में 23% का योगदान दिया।

यह स्थिति राष्ट्रीय स्तर की प्रवृत्तियों से बिल्कुल विपरीत है, जहाँ अनुसूचित जाति की आबादी देश की कुल जनसंख्या का केवल 8.6% होने के बावजूद, उन्होंने उसी वर्ष (2024–25) मनरेगा के तहत लगभग 18% मानव-दिवसों में भागीदारी की।

यह अंतर स्पष्ट करता है कि झारखंड में अनुसूचित जाति समुदाय की मनरेगा में भागीदारी न केवल राज्य में उनकी जनसंख्या हिस्सेदारी से कम है, बल्कि राष्ट्रीय औसत से भी नीचे है।

2.6 महिला और पुरुष की भागीदारी में उतार-चढ़ाव

-महिलाओं की भागीदारी थोड़ी बढ़ी लेकिन रोजगार में गिरावट

झारखंड में पुरुषों और महिलाओं की भागीदारी मनरेगा में लगभग बराबर है. जहाँ महिलाएँ कुल कार्य का 49% और पुरुष 51% कार्य करते हैं। हालाँकि, 2024-25 में कुल मानव-दिवसों (persondays) में आई गिरावट के कारण महिला और पुरुष दोनों के रोजगार में क्रमशः 6.1% और 9.7% की कमी हुई है।

	FY 2023-24	FY 2024-25	% Drop in the State[6]
महिलाओं द्वारा सृजित मानव-दिवस (लाख में)[7]	526.6	494.7	6.1
पुरुषों द्वारा सृजित मानव-दिवस (लाख में)[8]	570.5	514.9	9.7

तालिका 3: महिला और पुरुष द्वारा मानव-दिवस सृजन

3. श्रमिकों का कुल विलोपित जॉबकार्ड

-राज्य और केंद्र दोनों स्तरों पर नरेगा में श्रमिकों और जॉबकार्डों की पंजीकरण की संख्या, विलोपन की तुलना में अधिक रही है।

तालिका 3 में यह स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि दोनों वित्तीय वर्षों में जॉबकार्ड और श्रमिकों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। यह एक ओर पुनर्बहाली की दिशा में प्रारंभिक प्रयास के तौर पर देखा सकता है, लेकिन यह पहले किए गए गलत विलोपन का परिणाम भी हो सकता है। कई श्रमिक जो सिस्टम से हटाए गए थे, उन्होंने संभवतः नए जॉबकार्ड के लिए दोबारा आवेदन किया, बजाय इसके कि उन्हें औपचारिक रूप से पुनः जोड़ा गया हो। इस स्थिति की पुष्टि की आवश्यकता है।

हालाँकि, यह सुनिश्चित करना अत्यंत आवश्यक है कि जो वास्तविक श्रमिक काम की माँग करते हैं, उन्हें न केवल सिस्टम में दोबारा प्रवेश का अवसर मिले, बल्कि यह प्रक्रिया उपयुक्त पुनर्बहाली प्रणाली के माध्यम से हो। श्रमिकों के अधिकारों की रक्षा के लिए निरंतर निगरानी और सुधार आवश्यक होंगे।

[6] *(2023-24 और 2024-25 में मानव-दिवस सृजन के बिच का अंतर/2023-24 में मानव-दिवस सृजन)**100

[7] महिलाओं का कुल कार्य दिवस

[8] पुरुषों का कुल कार्य दिवस

	विलोपित जॉबकार्ड (लाख में)	पंजीकृत जॉबकार्ड (लाख में)	शुद्ध (नेट) विलोपित जॉबकार्ड (लाख में)[9]	विलोपित श्रमिक (लाख में)	श्रमिक जुड़े (लाख में)	नेट श्रमिक विलोपित (लाख में)[10]
झारखण्ड **(2023-24)**	3.2	8.2	-5.0	6.6	10	-3.4
झारखण्ड **(2024-25)**	1.8	5.3	-3.6	3.6	6.4	- 2.8
भारत **(2024-25)**	39.3	154.6	-115.3	113	233.2	-120.2

तालिका *4:* श्रमिक और जोबकार्ड विलोपन - झारखण्ड *vs* भारत

4. झारखंड में मजदूरी व्यय-आय की स्थिति

-वितीय वर्ष 2024-25 में मनरेगा के अंतर्गत अधिसूचित मजदूरी दरों में वृद्धि के बावजूद, श्रमिकों को उनके अधिकार से लगभग 10% कम मजदूरी प्राप्त हुई, जिससे उनकी वास्तविक आय में कमी दिखती है।

4.1 परिवारों की आय सृजन

आँकड़े यह दर्शाते हैं कि घोषित मजदूरी और वास्तविक प्राप्त मजदूरी के बीच लगातार अंतर बना हुआ है, जहाँ श्रमिकों को 2023-24 और 2024-25 दोनों वर्षों में घोषित दर से लगभग **10%** कम मजदूरी प्राप्त हुई।

2024-25 में घोषित मजदूरी दर ₹255 से बढ़ाकर ₹272 कर दी गई थी, जिसमें राज्य सरकार के तरफ से ₹27 का योगदान है। मनरेगा के तहत एक औसत परिवार की आय में ₹768 की वृद्धि दर्ज की गई, जो मुख्य रूप से घोषित मजदूरी में हुई बढ़ोतरी के कारण हुई। हालाँकि, यदि घोषित मजदूरी पूरी तरह से श्रमिकों को प्राप्त होती, तो 2024-25 में औसत संभावित आय ₹1361 तक बढ़ सकती थी।

वास्तविक मजदूरी कम मिलना मनरेगा में मजदूरी प्राप्ति से जुडी प्रणालीगत समस्याओं की ओर इशारा करती है. संभावित रूप से यह कार्य मापन की प्रक्रियाओं या वास्तविक कार्य के कम रिपोर्ट होने से जुड़ी हो सकती है। इस अंतर को दूर करना न केवल श्रमिकों को उचित भुगतान सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है, बल्कि मनरेगा के तहत बजटीय आवंटन के अधिकतम उपयोग करने के लिए भी बेहद महत्वपूर्ण है।

---

[9] शुद्ध विलोपित जॉबकार्ड= विलोपित जॉबकार्ड - पंजीकृत जॉबकार्ड

[10] शुद्ध विलोपित श्रमिक= विलोपित श्रमिक - पंजीकृत श्रमिक

वितीय वर्ष	घोषित मजदूरी दर (₹) 1	प्राप्त मजदूरी दर (₹) 2	गिरावट (%)[11] [(1-2)/1*100]	औसत मानव दिवस	नरेगा से परिवारों का आय (₹)[12]	संभावित आय (₹)[13]
2023-24	255	228	10.6	50.2	11449	12806
2024-25	272	245	10	49.9	12217	13578

तालिका *5:* नरेगा मजदूरी और परिवारों के आय की तुलना

4.2 अकुशल मजदूरी व्यय

-वितीय वर्ष *2024-25* में अकुशल श्रमिकों की वास्तविक मजदूरी पर खर्च *₹95.2* करोड़ घटा

2024-25 में वास्तविक अकुशल मजदूरी व्यय में 2023-24 की तुलना में ₹95.2 करोड़ (3.4%) की गिरावट देखी गई। 2023-24 में यह व्यय ₹2822 करोड़ था, जो घटकर 2024-25 में ₹2726.8 करोड़ रह गया।

दूसरी ओर, बकाया अकुशल मजदूरी 2023-24 में ₹7.1 करोड़ थी, जो 2024-25 में ₹13.6 करोड़ तक पहुँच गयी.

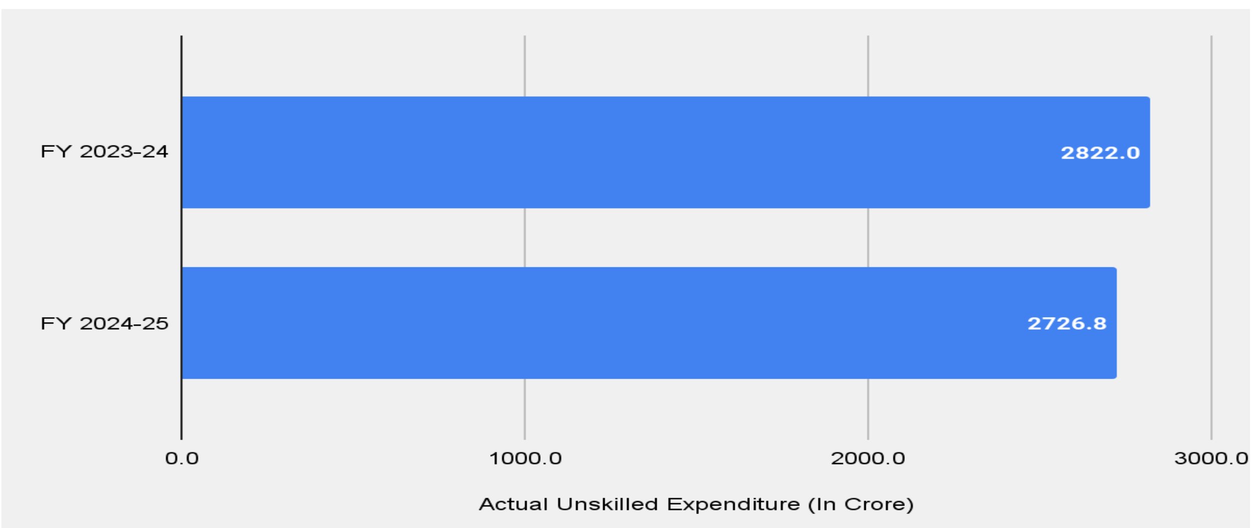

चित्र *3 :* वितीय वर्ष *2023-24* और *2024-25* में अकुशल मजदूरी व्यय और बकाया अकुशल मजदूरी

---

[11] घोषित मजदूरी दर (₹) - प्राप्त मजदूरी दर (₹)

[12] मनरेगा से परिवारों का आय = प्राप्त मजदूरी दर * औसत मानव-दिवस

[13] मनरेगा से परिवारों की संभावित आय = घोषित मजदूरी दर * औसत मानव-दिवस

निष्कर्ष

यह डेटा-आधारित वार्षिक मूल्यांकन झारखंड में मनरेगा के क्रियान्वयन की मिला-जुला तस्वीर पेश करता है।

एक ओर, श्रमिकों की कुल संख्या में सकारात्मक वृद्धि (पंजीकरण की संख्या हटाए गए श्रमिकों से अधिक) यह दिखाता है कि प्रशासनिक स्तर पर योजना से बाहर किए गए लोगों को दोबारा जोड़ने के प्रयास जारी हैं।

रोजगार के आँकड़े भौगोलिक असमानता को भी दर्शाते हैं—गढ़वा, राँची और धनबाद जैसे जिलों में मनरेगा के तहत अच्छा काम हुआ है, जबकि रामगढ़, खूंटी और लोहरदगा जैसे जिले काफी पीछे हैं। ऐसे जिलों में लक्षित हस्तक्षेप की आवश्यकता है।

हालाँकि, काम की माँग और रोजगार में अंतर जैसी समस्याएँ बनी हुई हैं। पंजीकरण बढ़ रहा है, लेकिन वास्तविक रोजगार घट रहा है—यह संकेत करता है कि काम की माँग को रोजगार के अवसरों में बदलने में संरचनात्मक बाधाएँ हैं।

2024-25 की पहली छमाही में भारी और समय पर हुई वर्षा मानव-दिवसों में तेज गिरावट का कारण हो सकती है। लेकिन अक्टूबर 2024 से जनवरी 2025 के बीच इसमें अच्छी वापसी देखने को मिली।

राज्य में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति समुदायों की भागीदारी लगातार कम बनी हुई है, 2024-25 में दोनों वर्गों के भागीदारी में आई थोड़ी गिरावट ने इस अंतर को और बढ़ा दिया है।

कुल मिलाकर, भले ही प्रशासनिक सुधार जैसे कि श्रमिकों की संख्या में वृद्धि हुई है, लेकिन झारखंड में मनरेगा के क्रियान्वयन में अभी भी गंभीर समस्याएँ बनी हुई हैं—जैसे काम का आवंटन, समान भागीदारी, समय पर भुगतान, और ज़मीनी स्तर पर रोजगार की गारंटी को पूरा करना।

देश के सबसे गरीब राज्यों में से एक झारखंड के लिए, मनरेगा का पूर्ण और न्यायसंगत क्रियान्वयन केवल एक नीति का विषय नहीं, बल्कि ग्रामीण जीवन के लिए जीवनरेखा है।

Team Behind This Report:

Devahuti Sarkar | Manisha Diggi | Vivek Gupta

Annexure 1

In Lakh

S. No	District	Persondays in FY 2023-24 (1)	Persondays in FY 2024-25 (2)	% Drop in Persondays [(1-2)/1*100]
1	SAHEBGANJ	35.8	26.1	27.0
2	JAMTARA	63.6	49.0	22.9
3	RAMGARH	22.2	18.0	18.6
4	LOHARDAGA	14.9	12.2	18.5
5	GODDA	43.0	37.5	12.8
6	CHATRA	67.8	59.9	11.8
7	SIMDEGA	33.1	29.3	11.6
8	SARAIKELA KHARSAWAN	32.5	28.9	11.0
9	GUMLA	35.8	32.0	10.7
10	LATEHAR	61.2	55.0	10.1
11	KHUNTI	17.0	15.5	8.8
12	GIRIDIH	100.0	91.7	8.3
13	KODERMA	22.3	20.6	7.6
14	PAKUR	30.3	28.0	7.5
15	DUMKA	60.4	56.1	7.2
16	HAZARIBAGH	55.6	51.8	6.9
17	WEST SINGHBHUM	40.4	38.0	5.8
18	PALAMU	60.0	57.0	5.0
19	DEOGHAR	66.8	65.3	2.2
20	BOKARO	36.7	36.4	0.9
21	EAST SINGHBUM	26.8	26.9	-0.3
22	DHANBAD	31.2	31.5	-0.7
23	RANCHI	38.3	38.8	-1.3
24	GARHWA	101.4	104.1	-2.7

नकारात्मक मान **(Value) बेहतर प्रवृति को दर्शाता है, जबकि सकारात्मक मान प्रदर्शन में गिरावट को दर्शाता है.

Annexure 2

2024-25 में योजनायें क्रियान्वित हुई

कार्य का प्रकार	योजना
आंगनवाड़ी/अन्य ग्रामीण संरचनाएं	आंगनवाड़ी भवन निर्माण
	पोटो हो खेल मैदान का निर्माण
	खेल मैदान का निर्माण
भूमि विकास	खेत का समतलीकरण
	मेडबंदी
लघु सिंचाई	नाला जीर्णोधार
	नहर सफाई
पेयजल	कूप निर्माण
ग्रामीण स्वच्छता	सोक पिट निर्माण
	टॉयलेट
जल संरक्षण और संचयन	वर्षा जल संचयन संरचना
	अमृत वाटिका सरोवर
व्यक्तिगत योजना	बकरी शेड निर्माण
	वृक्षारोपण
	बागवानी
	दीदी बाड़ी योजना
	डोभा और तालाब निर्माण
	अबुआ आवास योजना
	प्रधानमंत्री आवास योजना
	टिसिबी
ग्रामीण कनेक्टिविटी	मिटटी मुरम पथ निर्माण
अन्य	बकरी आश्रयस्थल
	बांध निर्माण
	तालाब का जीर्णोधार
	फेवर ब्लॉक निर्माण